

# महिला स्व-सहायता समूहों और मशरूम उत्पादन: स्वरोजगार के अवसरों का मूल्यांकन

सुमित कुमार

शोधार्थी, विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

## सारांश

महिला स्व-सहायता समूह (Self Help Groups - SHGs) ग्रामीण भारत में महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। वर्तमान समय में मशरूम उत्पादन एक ऐसे लघु उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है, जिसमें कम पूंजी, सीमित भूमि तथा अल्प संसाधनों के माध्यम से अधिक लाभ अर्जित किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा मशरूम उत्पादन के माध्यम से स्वरोजगार के अवसरों का मूल्यांकन करना है। अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार मशरूम उत्पादन महिलाओं की आय वृद्धि, रोजगार सृजन, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक स्थिति में सुधार का साधन बन रहा है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि मशरूम उत्पादन महिलाओं के लिए एक लाभकारी एवं पर्यावरण-अनुकूल व्यवसाय है, जिसे घर के सीमित स्थान में भी संचालित किया जा सकता है। SHGs के माध्यम से महिलाओं को प्रशिक्षण, ऋण सुविधा, विपणन सहायता तथा तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त होता है, जिससे उनकी उत्पादन क्षमता एवं आर्थिक स्थिति में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, मशरूम उत्पादन ग्रामीण बेरोजगारी को कम करने तथा पोषण स्तर को सुधारने में भी सहायक सिद्ध हो रहा है। हालाँकि, विपणन की समस्या, तकनीकी ज्ञान की कमी, भंडारण सुविधा का अभाव तथा सरकारी योजनाओं की सीमित पहुँच जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि यदि उचित प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता एवं बाजार उपलब्ध कराया जाए, तो महिला स्व-सहायता समूह मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में स्वरोजगार एवं ग्रामीण विकास के सशक्त माध्यम बन सकते हैं।

**कुंजीशब्द:** महिला स्व-सहायता समूह, मशरूम उत्पादन, स्वरोजगार, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास

## परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि एवं उससे संबंधित लघु उद्योग हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है, किंतु लंबे समय तक उन्हें आर्थिक निर्णयों एवं स्वरोजगार के अवसरों से पर्याप्त रूप से नहीं जोड़ा गया। इसी परिप्रेक्ष्य में महिला स्व-सहायता समूह (Self Help Groups - SHGs) ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। स्व-सहायता समूह महिलाओं को संगठित कर बचत, ऋण, प्रशिक्षण तथा सामूहिक उद्यम के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं। इन समूहों ने महिलाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता तथा आर्थिक सहभागिता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान समय में स्वरोजगार आधारित गतिविधियों में मशरूम उत्पादन एक अत्यंत लाभकारी एवं उभरता हुआ व्यवसाय माना जा रहा है। मशरूम एक पोषक एवं औषधीय गुणों से युक्त खाद्य पदार्थ है, जिसकी मांग शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में निरंतर बढ़ रही है। इसकी खेती के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता नहीं होती तथा इसे कम लागत और सीमित संसाधनों के साथ भी प्रारंभ किया जा सकता है। यही कारण है कि यह व्यवसाय ग्रामीण महिलाओं एवं स्व-सहायता समूहों के लिए रोजगार एवं आय का एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा है। मशरूम उत्पादन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसे घर के सीमित स्थान में भी किया जा सकता है, जिससे महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों में भी भागीदारी निभा सकती हैं। इसके अतिरिक्त, मशरूम उत्पादन कृषि अपशिष्ट जैसे भूसा, पुआल एवं जैविक पदार्थों के उपयोग पर आधारित होने के कारण पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक है। भारत सरकार तथा विभिन्न गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा महिलाओं को मशरूम उत्पादन हेतु प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता एवं वित्तीय सहयोग प्रदान किया जा रहा है, जिससे

ग्रामीण क्षेत्रों में इस व्यवसाय का विस्तार तेजी से हो रहा है। महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से सामूहिक रूप से मशरूम उत्पादन करने से महिलाओं को बाजार तक पहुँच, उत्पाद के विपणन तथा संसाधनों के साझा उपयोग में सुविधा प्राप्त होती है। इससे उनकी उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है तथा आय के स्थायी स्रोत विकसित होते हैं। साथ ही, यह गतिविधि महिलाओं के सामाजिक सम्मान एवं निर्णय लेने की क्षमता को भी सुदृढ़ करती है। मशरूम उत्पादन ग्रामीण बेरोजगारी एवं गरीबी उन्मूलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, क्योंकि यह कम समय में अधिक लाभ देने वाला व्यवसाय है। इसके माध्यम से महिलाएँ न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकती हैं, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन में भी योगदान दे सकती हैं। हालाँकि, इस क्षेत्र में कई चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं, जैसे तकनीकी ज्ञान का अभाव, गुणवत्तायुक्त बीज की कमी, विपणन समस्याएँ, भंडारण सुविधाओं का अभाव तथा सरकारी योजनाओं की सीमित जानकारी। इन समस्याओं के कारण अनेक महिला समूह इस व्यवसाय को दीर्घकाल तक सफलतापूर्वक संचालित नहीं कर पाते।

इसलिए आवश्यक है कि महिलाओं को नियमित प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, आधुनिक तकनीक तथा बाजार संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई जाए। प्रस्तुत अध्ययन महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा मशरूम उत्पादन के माध्यम से स्वरोजगार के अवसरों का मूल्यांकन करने का प्रयास करता है। अध्ययन में यह विश्लेषण किया जाएगा कि मशरूम उत्पादन किस प्रकार महिलाओं की आय, रोजगार, सामाजिक स्थिति तथा आत्मनिर्भरता को प्रभावित करता है। साथ ही, इस क्षेत्र में विद्यमान चुनौतियों एवं संभावनाओं का भी विस्तृत अध्ययन किया जाएगा, ताकि महिला स्व-सहायता समूहों को अधिक प्रभावी एवं सशक्त बनाया जा सके। इस प्रकार, मशरूम उत्पादन न केवल ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक विकास का माध्यम है, बल्कि यह महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास एवं सतत आजीविका के निर्माण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

### **महिला स्व-सहायता समूहों की भूमिका**

महिला स्व-सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं को संगठित कर आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण का कार्य करते हैं। ये समूह बचत, ऋण सुविधा, प्रशिक्षण तथा सामूहिक व्यवसाय संचालन के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाते हैं। मशरूम उत्पादन जैसे लघु उद्योगों में SHGs की भागीदारी महिलाओं की आय वृद्धि और रोजगार सृजन में सहायक होती है। इसके माध्यम से महिलाएँ आत्मविश्वास प्राप्त करती हैं तथा परिवार एवं समाज में उनकी निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होती है।

### **मशरूम उत्पादन का आर्थिक महत्व**

मशरूम उत्पादन कम लागत और कम स्थान में अधिक लाभ देने वाला व्यवसाय है। इसकी बाजार में बढ़ती मांग के कारण यह ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार का प्रभावी साधन बन गया है। महिलाएँ घर पर ही मशरूम उत्पादन कर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकती हैं। इससे परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है तथा ग्रामीण बेरोजगारी को कम करने में सहायता मिलती है। यह व्यवसाय कृषि अपशिष्टों का उपयोग कर पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान देता है।

### **महिला सशक्तिकरण और स्वरोजगार**

मशरूम उत्पादन महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करता है, जिससे उनका सामाजिक एवं मानसिक विकास होता है। स्वरोजगार के माध्यम से महिलाएँ अपने परिवार की आय में योगदान देती हैं और आत्मनिर्भर बनती हैं। SHGs के माध्यम से सामूहिक कार्य करने से उनमें नेतृत्व क्षमता, सहयोग की भावना तथा सामाजिक जागरूकता का विकास होता है। इससे ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार होता है और वे विकास प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाने लगती हैं।

### **प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता का महत्व**

मशरूम उत्पादन की सफलता के लिए उचित प्रशिक्षण एवं तकनीकी ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। सरकारी संस्थाएँ एवं गैर-सरकारी संगठन महिलाओं को मशरूम उत्पादन, भंडारण तथा विपणन से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। तकनीकी सहायता से महिलाएँ गुणवत्तापूर्ण उत्पादन कर अधिक लाभ अर्जित कर सकती हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम महिलाओं की दक्षता बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें आधुनिक उत्पादन तकनीकों एवं बाजार की आवश्यकताओं के प्रति जागरूक बनाते हैं।

## विपणन एवं चुनौतियाँ

मशरूम उत्पादन में विपणन एक प्रमुख चुनौती है। ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार तक सीमित पहुँच, भंडारण सुविधाओं की कमी तथा उचित मूल्य न मिलना महिलाओं के लिए समस्या उत्पन्न करता है। इसके अतिरिक्त, तकनीकी जानकारी का अभाव और वित्तीय संसाधनों की कमी भी उत्पादन को प्रभावित करती है। यदि महिलाओं को उचित बाजार, परिवहन सुविधा और सरकारी सहयोग प्राप्त हो, तो मशरूम उत्पादन स्वरोजगार एवं ग्रामीण विकास का अत्यंत प्रभावी माध्यम बन सकता है।

## साहित्य समीक्षा

**नाबार्ड (NABARD, 2018)** नाबार्ड द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि महिला स्व-सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्ययन के अनुसार, मशरूम उत्पादन जैसे लघु उद्योगों से महिलाओं की आय में वृद्धि हुई तथा उनमें आत्मनिर्भरता की भावना विकसित हुई। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया कि प्रशिक्षण एवं ऋण सुविधा मिलने से महिलाओं की उत्पादन क्षमता में सुधार हुआ।

**शर्मा एवं सिंह (2019)** शर्मा एवं सिंह के अध्ययन में मशरूम उत्पादन को ग्रामीण महिलाओं के लिए लाभकारी स्वरोजगार के रूप में प्रस्तुत किया गया। अध्ययन में पाया गया कि कम लागत एवं कम स्थान में अधिक लाभ मिलने के कारण महिलाएँ इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हो रही हैं। शोध में यह भी स्पष्ट हुआ कि SHGs के माध्यम से सामूहिक उत्पादन करने पर विपणन एवं संसाधनों के उपयोग में सुविधा प्राप्त होती है।

**कुमार एवं देवी (2020)** कुमार एवं देवी ने अपने अध्ययन में महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा संचालित मशरूम उत्पादन इकाइयों का विश्लेषण किया। अध्ययन के अनुसार, मशरूम उत्पादन से महिलाओं की मासिक आय में वृद्धि हुई तथा परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आया। शोध में यह भी पाया गया कि तकनीकी प्रशिक्षण की कमी एवं बाजार तक सीमित पहुँच महिलाओं की प्रगति में बाधा उत्पन्न करती है।

**विश्व बैंक रिपोर्ट (World Bank, 2021)** विश्व बैंक की रिपोर्ट में ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक विकास में सूक्ष्म उद्यमों की भूमिका का अध्ययन किया गया। रिपोर्ट के अनुसार, मशरूम उत्पादन महिलाओं के लिए एक पर्यावरण-अनुकूल एवं टिकाऊ व्यवसाय है। SHGs के माध्यम से महिलाओं को वित्तीय सहायता एवं प्रशिक्षण उपलब्ध होने से उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला।

**यादव एवं चौधरी (2023)** यादव एवं चौधरी के अध्ययन में महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से मशरूम उत्पादन के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन किया गया। अध्ययन में पाया गया कि इस व्यवसाय ने महिलाओं को स्वरोजगार के नए अवसर प्रदान किए तथा ग्रामीण बेरोजगारी को कम करने में योगदान दिया। शोध में यह सुझाव दिया गया कि सरकारी योजनाओं एवं विपणन सुविधाओं का विस्तार महिलाओं की सफलता को और अधिक बढ़ा सकता है।

## अनुसंधान अंतराल

महिला स्व-सहायता समूहों एवं मशरूम उत्पादन पर विभिन्न अध्ययनों में आर्थिक सशक्तिकरण, स्वरोजगार तथा ग्रामीण विकास के पहलुओं का विश्लेषण किया गया है, किंतु अधिकांश शोध सामान्य स्तर तक सीमित हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला समूहों द्वारा मशरूम उत्पादन की वास्तविक आय, विपणन व्यवस्था, तकनीकी चुनौतियों तथा सरकारी योजनाओं के प्रभाव का गहन अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। कई अध्ययनों में क्षेत्रीय असमानताओं एवं महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तनों का विस्तृत विश्लेषण नहीं किया गया है। इसलिए इस विषय पर व्यावहारिक एवं क्षेत्र-विशिष्ट अध्ययन की आवश्यकता है, ताकि स्वरोजगार की संभावनाओं का समग्र मूल्यांकन किया जा सके।

## अध्ययन के उद्देश्य

1. महिला स्व-सहायता समूहों की मशरूम उत्पादन में भूमिका का अध्ययन करना।
2. मशरूम उत्पादन के माध्यम से महिलाओं के स्वरोजगार अवसरों का मूल्यांकन करना।

3. मशरूम उत्पादन से महिलाओं की आय एवं आर्थिक स्थिति में हुए परिवर्तन का विश्लेषण करना।
4. मशरूम उत्पादन में महिलाओं के समक्ष आने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों की पहचान करना।
5. महिला स्व-सहायता समूहों के लिए प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता एवं विपणन सुविधाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

### अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन महिला स्व-सहायता समूहों एवं मशरूम उत्पादन के माध्यम से स्वरोजगार के अवसरों का मूल्यांकन करने हेतु किया गया है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का संग्रह किया गया। प्राथमिक आँकड़े ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत 50 महिला स्व-सहायता समूह सदस्यों से साक्षात्कार एवं प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किए गए, जबकि द्वितीयक आँकड़े पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों तथा इंटरनेट स्रोतों से संकलित किए गए। अध्ययन में महिलाओं की आय, रोजगार, प्रशिक्षण, विपणन सुविधा एवं उत्पादन स्तर से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण किया गया। प्राप्त आँकड़ों को सारणी एवं प्रतिशत विधि द्वारा प्रस्तुत कर निष्कर्ष निकाले गए।

**तालिका 1: मशरूम उत्पादन से महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में परिवर्तन**

क्रम संख्या	अध्ययन के पहलू	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	आय में वृद्धि हुई	42	84%
2	स्वरोजगार प्राप्त हुआ	40	80%
3	आत्मनिर्भरता में वृद्धि	38	76%
4	सामाजिक सम्मान में वृद्धि	35	70%
5	विपणन संबंधी समस्याएँ	28	56%
6	प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस हुई	32	64%
7	सरकारी सहायता प्राप्त हुई	25	50%

### डेटा विश्लेषण

उपरोक्त तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि मशरूम उत्पादन महिला स्व-सहायता समूहों के लिए स्वरोजगार का प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है। अध्ययन में 84% महिलाओं ने स्वीकार किया कि उनकी आय में वृद्धि हुई, जबकि 80% महिलाओं को स्वरोजगार प्राप्त हुआ। लगभग 76% महिलाओं ने आत्मनिर्भरता में वृद्धि महसूस की तथा 70% महिलाओं ने सामाजिक सम्मान में सकारात्मक परिवर्तन अनुभव किया। दूसरी ओर, 56% महिलाओं ने विपणन संबंधी समस्याओं को प्रमुख चुनौती बताया। 64% उत्तरदाताओं ने तकनीकी प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया, जबकि केवल 50% महिलाओं को सरकारी सहायता प्राप्त हो सकी। इससे स्पष्ट होता है कि उचित प्रशिक्षण, विपणन सुविधा एवं सरकारी सहयोग मिलने पर मशरूम उत्पादन महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक विकास का सशक्त माध्यम बन सकता है।

### अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन महिला स्व-सहायता समूहों एवं मशरूम उत्पादन के माध्यम से स्वरोजगार के अवसरों के महत्व को स्पष्ट करता है। यह अध्ययन ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में मशरूम उत्पादन की भूमिका को समझने में सहायक है। अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि कम लागत एवं सीमित संसाधनों में भी महिलाएँ मशरूम उत्पादन द्वारा आत्मनिर्भर बन सकती हैं तथा परिवार की आय में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। यह शोध नीति-निर्माताओं, सरकारी संस्थाओं एवं गैर-सरकारी संगठनों को महिलाओं के लिए प्रभावी प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता एवं विपणन सुविधाएँ विकसित करने में उपयोगी दिशा प्रदान करता है। अध्ययन ग्रामीण बेरोजगारी एवं गरीबी उन्मूलन के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि मशरूम उत्पादन रोजगार सृजन का सशक्त माध्यम बन सकता है। साथ ही, यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं को महिला उद्यमिता एवं ग्रामीण विकास से संबंधित नए अनुसंधान के लिए आधार प्रदान करता है।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिला स्व-सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं तथा मशरूम उत्पादन उनके लिए स्वरोजगार का एक प्रभावी एवं लाभकारी माध्यम बनकर उभरा है। मशरूम उत्पादन कम लागत, सीमित भूमि एवं कम संसाधनों में संचालित होने वाला व्यवसाय है, जिसके माध्यम से महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी निभा सकती हैं। अध्ययन में पाया गया कि इस व्यवसाय से महिलाओं की आय में वृद्धि हुई, आत्मनिर्भरता विकसित हुई तथा परिवार एवं समाज में उनका सम्मान बढ़ा है। महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से सामूहिक रूप से कार्य करने से महिलाओं को प्रशिक्षण, ऋण सुविधा, तकनीकी मार्गदर्शन एवं विपणन सहायता प्राप्त होती है, जिससे उनकी उत्पादन क्षमता और आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। इसके अतिरिक्त, मशरूम उत्पादन ग्रामीण बेरोजगारी एवं गरीबी को कम करने में भी सहायक सिद्ध हो रहा है। हालांकि, अध्ययन में यह भी सामने आया कि विपणन की समस्याएँ, भंडारण सुविधाओं का अभाव, तकनीकी जानकारी की कमी तथा सरकारी योजनाओं तक सीमित पहुँच महिलाओं की प्रगति में बाधा उत्पन्न करती हैं। इसलिए आवश्यक है कि सरकार एवं संबंधित संस्थाएँ महिलाओं को नियमित प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, आधुनिक तकनीक तथा बाजार सुविधा उपलब्ध कराएँ। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से मशरूम उत्पादन ग्रामीण विकास, महिला उद्यमिता एवं सतत स्वरोजगार को बढ़ावा देने का एक सशक्त साधन है।

## संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, आर. (2019). *महिला सशक्तिकरण एवं स्व-सहायता समूह*. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
2. कुमार, एस. (2020). *ग्रामीण विकास में मशरूम उत्पादन की भूमिका*. पटना: ज्ञान प्रकाशन।
3. शर्मा, पी. एवं सिंह, आर. (2019). "महिला स्व-सहायता समूहों का आर्थिक विकास में योगदान." *ग्रामीण विकास शोध पत्रिका*, 12(3), 45-52।
4. यादव, एम. (2021). *मशरूम उत्पादन एवं स्वरोजगार के अवसर*. जयपुर: साहित्य भवन।
5. चौधरी, के. (2022). "ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार में मशरूम उत्पादन का महत्व." *भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका*, 8(2), 66-72।
6. नाबार्ड. (2018). *स्व-सहायता समूह एवं महिला विकास रिपोर्ट*. मुंबई: NABARD प्रकाशन।
7. मिश्रा, डी. (2020). "महिला स्व-सहायता समूहों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन." *समाज विज्ञान समीक्षा*, 15(1), 30-38।
8. सिंह, ए. एवं वर्मा, एल. (2021). *ग्रामीण उद्यमिता और महिला विकास*. लखनऊ: हिंदी अकादमी।
9. देवी, आर. (2019). "मशरूम उत्पादन में महिलाओं की भागीदारी." *कृषि एवं ग्रामीण विकास जर्नल*, 10(4), 58-64।
10. प्रसाद, वी. (2022). *स्वरोजगार और महिला उद्यमिता*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
11. विश्व बैंक. (2021). *ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक विकास पर रिपोर्ट*. नई दिल्ली: विश्व बैंक प्रकाशन।
12. पांडेय, एस. (2020). "महिला सशक्तिकरण में स्व-सहायता समूहों की भूमिका." *भारतीय सामाजिक अध्ययन पत्रिका*, 9(2), 22-29।
13. झा, एन. (2023). *मशरूम उत्पादन की आधुनिक तकनीक*. पटना: कृषि प्रकाशन।
14. राय, पी. एवं गुप्ता, एम. (2021). "ग्रामीण क्षेत्रों में मशरूम उत्पादन की संभावनाएँ." *भारतीय कृषि पत्रिका*, 14(5), 41-48।
15. तिवारी, आर. (2022). *ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण*. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
16. शुक्ला, के. (2023). "महिला स्व-सहायता समूह एवं ग्रामीण रोजगार." *समकालीन सामाजिक शोध पत्रिका*, 11(3), 75-82।